नवीन माथुर पंचोली

ग़ज़ल

जब लफ़्ज़ों के भाव सफ़ल हो जाते हैं।
लोगों के जज़्बात सजल हो जाते हैं।

जिनके सिर पर हाथ हो ऊपर वालों का,
उनके सारे काम अमल हो जाते हैं।

साथ निभाते हैं आपस में जब सच्चा,
चलकर रिश्ते और सबल हो जाते हैं।

अक़्सर जिनसे दिल बहलाया है हमने,
काम वही इक रोज़ शग़ल हो जाते हैं।

कुदरत ने इक सीख जताई कीचड़ से,
खिलकर इसमें फूल कँवल हो जाते हैं।

ऊँचे - नीचे , सच्चे - झूठे मसलों पर,
लिखते-लिखते शेर ग़ज़ल हो जाते हैं।

रोज़ आसाँ सफ़र नहीं लगता।
हर दुआ में असर नहीं लगता।

मुश्क़िलों से निज़ात पालें पर,
रास्ता मुख़्तसर नहीं लगता।

हम बता दें उसे सब राज़ मग़र ,
शख़्श वो मोतबर नहीं लगता।

हैं हर इक हाथ में ख़बर सारी,
कोई अब बेख़बर नहीं लगता।

पेट भरना है जिसमें मजबूरी,
काम ऐसा बसर नहीं लगता।

रात के बीतने में दिन जैसा,
कोई ठहरा पहर नहीं लगता।

भीड़ के साथ लाख में कोई,
एक जैसा मग़र नहीं लगता।